# निराला के काव्य में आत्मसंघर्ष

**कीर्ति कुमारी**
**यू.जी.सी.नेट/जे.आर.एफ**
**ति.माँ. भागलपुर वि.वि., भागलपुर**

बींसवी सदी के काव्य रचनाकारों में हिन्दी कविता को सबसे अलग व नई ऊर्जा से संपृक्त करने वाले महाकवि निराला ने जो सृजन किया वह काव्य और साहित्य के श्रेष्ठतम मूल्यों से अनुप्राणित है। अपने रचना संसार में कवि का व्यक्तित्व काव्य के विराट आयामों के साथ तादात्म्य का अनुभव करके प्रेरण की समाधि में कुछ ऐसा उठ गया है कि वहाँ से वाणी की जो भी झंकार उठती है वह सत्य, शिव और सुन्दर की पर्यायवाची बन जाती है। संभवतः इसी कारण से उन्हें 'महाप्राण' सम्बोधन मिला। महाप्राण निराला की रचनाओं में अनुभूति की पूरी उष्मा, जीवन का पूरा आवेग है। ननददुलारे बाजपेयी के शब्दों में–महाप्राण कवि वह है जो आस्था नहीं खोता, पराजित नहीं होता, और अपने को कठिन परिस्थितियों में रखकर भी मानववादी भूमि पर बना रहता है। निःसंदेह निराला ऐसे ही कवि थे।1

निराला का काव्य आत्मसंघर्ष का है। संसार से लेकर निज मन तक का संघर्ष उसके साथ निरंतर चलता रहा। यह एक सर्वविदित तथ्य है कि जीवनभर निराला संघर्षरत रहे। उनका जीवन आभावों में बीता। उनका यह संघर्ष उनकी रचनाओं में भी मुखरित हुआ है। फिर चाहे वह उनकी गद्य रचनाएँ हों या पद्य रचनाएँ सभी जगह हमें उनके व्यक्तित्व की झलक मिलती है। इस व्यक्तित्व में कभी बाहरी परिवेश से संघर्ष है तो कभी अपना आत्म संघर्ष। निराला का महाप्राण व्यक्तित्व आजीवन तूफानों को झेलता रहा, परंतु कोई भी झंझावात उसे जड़ से नहीं हिला सका। यही कारण है कि उनकी काव्यात्मक ऊर्जा अंत तक अक्षुण्ण बनी रही। डॉ. भगीरथ मिश्र ने उनके संबंध में ठीक ही कहा–''हिन्दी के साहित्यकारों और कवियों में निराला जैसे व्यक्तित्व के लोग बहुत कम ही मिलेंगे। उनमें पौरुष कर फंकार था, वाणी का ओज था, जीवन की मस्ती थी, विचारों की अक्खड़ता थी और सबसे बढ़कर उनका स्वाभिमान था।''2

निराला के समूचे व्यक्तित्व और लेखन को परखने के लिए उनके जीवन के आत्मसंघर्ष को देखने की जरुरत है। वे लगातार रुढ़िवादी मान्यताओं का विरोध किए, समाज के बंधे–बंधाए नियमों के स्थान पर नए समाज की कल्पन की जहाँ मानव मात्र का विकास हो सकेगा। उन्होंने जातिगत बंधनों का भी विरोध किया, परंतु एक समय ऐसा आया जब निराला को यह अनुभव हुआ कि वे कतई अकेले पड गए हैं। यह अकेलापन इसलिए नहीं था कि वह अपनी अंतिम अवस्था की ओर बढ़ रहे थे बल्कि इसलिए था क्योंकि उनसे सभी दूर जा रहे थे। संसार के मेला अपने आनंद में मग्न था और आनंद की निर्मल धार के स्त्रोत को लोग भूला चुके थे। ''परिवेश की अपनी दुनियाँ है, निराला की अपनी दुनियाँ है। निराला के लिए परिवेश मृत है तो परिवेश के लिए निराला मृत है। अचानक पत्नी का मरना, चाचा–चाची आदि के साथ पुत्री सरोज का काल–कवलित होना, संपादकों की उपेक्षापूर्ण नीति ने निराला को तोड़ कर रख दिया। निराला का दर्द उनकी कविता में सम्पूर्ण संसार का दर्द बन गया है।

''दुख ही जीवन की कथा रही
क्या कहूँ आज जो नहीं कही''4

सम्पूर्ण हिन्दी साहित्य में निराला एक ऐसे व्यक्तित्व हैं जिन्होंनें जीवन का कटु संघर्ष झेला और आपदाओं की रगड़ से उनकी छाती छिलती रही, अंततः कवि ने दुःख और संघर्ष को अपना जीवन साथी बनाया। विपरीत परिस्थितियों के बीच निराला जीते जा रहे थे। नागार्जुन के अनुसार– निराला के जीवन में दुधर्ष समर चलता रहा। एक ओर भारती थी तो दूसरी ओर जड़ जीवन के कौशल संचित–

''भारती इधर, हे उधर सकल
जड़ जीवन के संचित कौशल''5

अपनी साहित्यिक जीवन के प्रथम प्रहर में निराला को समाज की जिस मानसिकता का सामना करना पड़ रहा था उसमें रूढ़ि, अंधविश्वास के अतिरिक्त संपादकों की दुष्प्रवृति भी शामिल है। इसलिए, निराला ने सरोज–स्मृति में लिखा है–

''लौटी रचना लेकर उदास,
तकता रहा मैं दिशा कास,
बैठा प्रन्तर में दीर्ध प्रहर
व्यतीत करता था गुनगुन कर''6

दुःख–दर्द और कटु अनुभवों के दौर से गुजरते हुए निराला के व्यक्तित्व का निर्माण हुआ है। रचना संपादकों द्वारा लौटा दी जाती थी, निराला को इसका दर्द जहाँ एक ओर तोड़ रहा था वहीं दूसरी ओर वे सामाजिक रूढ़ि, अंधविश्वास की कारा को तोड़ने के लिए विद्रोही स्वर को निखारते जा रहे थे–

''तुम करो ब्याह तोड़ता नियम,
मैं सामाजिक योग के प्रथम चरण,
लग्न के पढ़ूंगा स्वयं मंत्र
यदि पंडित जी होंगे स्वतंत्र''7

आजीवन निराला जी जीवन के अन्त में धू–धूकर जलते रहे हैं। सदा अभावों में अपने आप को पाते रहे हैं, कभी कोई स्थाई ''ठिकाना नहीं मिला जिसकी अभिव्यक्ति खुद निराला इन पंक्तियों के द्वारा करते हैं–

''दिये हैं मैंने जगत् को फूल–फल,
किया है अपनी प्रतिभा से चकित चल,
पर अनश्वर था सकल पल्लवित पल
ठाठ जीवन का वही
जो ढह गया है।''9

निराला के मन का द्वंद्व वैराग्य और श्रृंगार को लेकर नहीं, जीवन संघर्ष की सफलता और असफलता को लेकर है–

''धन्ये मैं पिता निरर्थक था
कुछ भी तेरे हित कर न सका''10

लेकिन इस आत्मग्लानि के आगे उन्होंने आत्म समर्पण नहीं किया, बल्कि संघर्ष मानों और भी तीव्र हो उठा हो। निराला के मन में एक ओर यह तीव्र ग्लानि भी है, दूसरी ओर अपनी साहित्यिक सिद्धि में प्रबल विश्वास भी है। 'सरोज–स्मृति' में कवि का एक ही मन है जो निरर्थक पिता होने के कारण अपने आप को धिक्कारता है किन्तु 'राम की शक्ति पूजा' में राम के दो मन है–एक वह मन जो रावणरुपी अंधकार के सामने पराजित हो जाता है, थक जाता है। किन्तु–''वह रहा एक मन राम का जो न थका। वह अथक, अपराजेय, अविचलित मन ग्लानि, पराजय और विक्षेप के ऊपर सदा उठा रहेगा–साक्षीरुपा दृष्टि के समान।''11

निराला के अंतःकरण का संघर्ष उनकी लम्बी कविता 'तुलसीदास' में पूरी तरह से आया है। तुलसीदास का मुख्य संघर्ष आंतरिक है, उन्हें मुक्ति पानी है अपने संस्कारों से, रत्नावली के प्रति अपनी आसक्ति से।

निराला का आत्मसंघर्ष साहित्य और समाज के आंतरिक संघर्ष से घूलमिलकर एक हो गया है। जहाँ भी निराला के छायावाद में उदात्त है, वहाँ किसा न किसी रुप में यह संघर्ष विद्यमान है। समाज में निम्नवर्ग का हो रहे शोषण को निराला जी नें अपनी आँखों से देखा था। इस अन्यापूर्ण कार्य की गहरी छाप निराला की मानसिकता पड़ा। समाज में एक ओर जहाँ गरीबों दलितों का शोषण किया जा रहा था, श्रमिक –किसान पीसा जा रहा था, अछूतों को मंदिर प्रवेश–निषेध था, नारियों को बेवजह प्रताडित किया जा रहा था। वहीं दूसरी ओर जमीन्दारों–सामंतों की फाकेमस्ती, मधुवाला और मधुकलश की चुस्की चरम उत्कर्ष पर थी। आदमी से ज्यादा प्यारा शराब का प्याला दिखने लगा था। उस तरह के कुकृत्य को देखकर निराला जी घुटते रहे और उनके विद्रोह स्वरुप काव्य प्रणयण किया। आदमी की स्थिति जानवरों से भी बदतर हो चुका था–

''मुँह फटी पुरानी झोली को फैलाता,
वह आता, दो टूक कलेजे को करता,
पछताता पथ पर आता।'' 12

वर्षा सृजन का प्रतीक है, निराला के लिए ध्वंस का भी। जैसे राग के साथ विराग। वैसे ही सृजन के साथ ध्वंस। निराला उल्लास और विषाद के ही कवि नहीं संघर्ष और क्रांति के भी कवि हैं।

उनका यह संघर्ष हमें 'तोड़ती पत्थर' में देखने को मिलती है जहाँ संघर्ष के साथ क्रांति भी है। जहाँ शोषित वर्ग बार–बार अपनी गुलामी की बेडियों पर प्रहार कर रहा है–

''गुरू हथौडा हाथ
करती बार–बार प्रहार प्रहार
सामने तरू मालिका अêलिका, प्रकार।''13

निराला का समूचा साहित्य इसी अराजकता की ओर पैनी और गहरी नजर रखता है।

'वज्रादपि कठोर–मृदुनि कुसुमादपि' निराला एक विराट समष्टि का नाम है। जीवन को कविता में और कविता को जीवन में उतारकर वंचितों और उपेक्षितों की वेदना, भूख, मान को अपनी आत्मा में महसूस करने वाला साधक निराला है। वो रास्ते में खड़ा

होकर गगन से होड़ लेती ऊँची अ ालिकाओं को नहीं देखता। वो देखता है पत्थर तोड़ते हाथों को और मिटी गुम होती श्रम की बूँदों को। 'कुल्ली भाट' के घर खाना खाने से उसका धर्म नहीं जाता, लेकिन सर्दी से सिकुडते लाचार व्यक्ति के सामने खुद को कोट, दुशाले में लिपटा देखकर हजार धिक्कार से जरूर भर जाता है उसका मन। वह 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' की सच्ची अभिव्यक्ति है। वे अपनी जीवन की त्रासद स्थितियों का वर्णन किसी से नहीं किया लेकिन उनका साहित्य उनका बखूबी परिचय देता है। मुक्तिबोध के शब्दों में कहें तो–''एक, कलाकार के लिए तीन प्रकार के संघर्ष करना आवश्यक है–एक सुन्दर कलाकृति की रचना के लिए अभिव्यक्ति का संघर्ष, दो, कलात्मक चेतना के अंगरुप संवेदनात्मक उद्देश्यों के अनुसार जीवन जगत में भीगने, रमने अपने को निजबद्धता से अधिकाधिक दूर करने और अधिकाधिक मानवीय बनाने के लिए आत्मसंघर्ष; तीसरे, वास्तविक जीवन के बुनियादी तत्वों के कारण बनने वाली हलचलों का जिन्दगी के अलग–अलग तानों–बानों का तजुर्बा हासिल करने के लिए मानव समस्याओं को अनुभूत करके मानवता के उदार लक्ष्यों से एकाकार होकर वास्तविक जीवन अनुभव की समृद्धि, प्रप्त करने हेतु वह संघर्ष जिसे हम तत्व के लिए, तत्व प्राप्ति के लिए संघर्ष कह सकते हैं।''14 निराला में हमें इन तीनों संघर्ष का दर्शन होता है।

निराला प्रकाश के प्रति दृढ़ आस्था के कवि हैं, उनकी यह दृष्टि महत्वपूर्ण है कि सत्य और असत्य, धर्म और अधर्म के बीच संघर्ष शश्वत है, यह कभी न समाप्त हाने वाला लगातार लड़ा जानेवाला मुद्दा है, उसके यहाँ कोई आखिरी जीत या आखिरी हार नहीं है। लड़ते रहना ही नियति है। इसलिए 'राम की शक्ति पूजा' में वे 'राम रावण का अपराजेय समर' पद का इस्तेमाल करते हैं। यह कहने के बाद भी कि 'दुख ही जीवन की कथा रही' निराला दुख से आक्रांत नहीं होते, उसे पार कर जाते हैं। राम की शक्ति पूजा में जाम्बवान राम से शक्ति की 'मौलिक कल्पना' करने के लिए कहते हैं, लेकिन वास्तव में शक्ति की यह मौलिक कल्पना निराला की अपनी है। 'राम' वास्तव में निराला खुद हैं। ये निराला जैसे कवि के लिए ही मुमकिन था कि वे अपने राम में खुद को और खुद में अपने राम को उतार लें और उसी राम को किसी औसत मध्यवर्गीय व्यक्ति का भी रुप दे दें। राम के संघर्ष को अपना संघर्ष और अपने संघर्ष को राम का संघर्ष बना दें और इसे आजादी के व्यापक संघर्ष से जोड़ दें। '' जिस साहित्यकार की आत्मा जितना अधिक आत्मक्रंदन करती है, जर्जर जीवन की भट्ठी में जितन अधिक तपती है, युग आघातों को जितन अधिक सहती है और जीवन की चक्की में पिसती हुई जितनी ही अधिक मर्म–व्यथा की निजी अनुभूतियाँ प्राप्त करती है, उतनी ही अधिक सच्चाई और ईमानदारी से वह साहित्यकार जीवन का हाहाकार अपनी रचनाओं में प्रस्तुत करता है।''15

वस्तुतः महाप्राण निराला के काव्य में उनका युग बोलता है। युग का दर्द अभिव्यंजित दिखता है। जीवन की चुनौती की स्वीकार भावना है। अपने जीवन के विषद, विष, अंधेरे, को निराला ने जिस तरह से करुणा और प्रकाश में बदला वह अद्वितीय है।

# संदर्भ सूची


1. पंडित नन्ददुलारे, बाजपेयी कवि निराला, कुछ प्रश्न
2. न्दिी विद्दयापीठ मासिक पत्रिका, सुधाकर पांडेय कृत, निराला साहित्य संदर्भ पृ.–41
3. निराला की साहित्य साधना–2, रामविलास शर्मा, पृ.–240
4. एक व्यक्ति : एक युग, नागार्जुन, पृ.–91
5. अपरा, निराला, पृ–150
6. अपरा, निराला पृ–156
7. राग–विराग, रामविलास शर्मा, पृ.–129
8. वही, 129
9. वही, 80
10. वही, 31
11. परिमाल–महाप्राण निराला, पृ.–103
12. राग–विराग, रामविलास शर्मा, पृ.–119
13. नई कविता का आत्मसंघर्ष, मुक्तिबोध, पृ–42
14. शक्ति पूंज निराला, डा. कृष्णदेव बहरी, पृ.–3